आचरण

विचार-मंथन

समस्या अभी बाकी है

आचरण

विचार-मंथन

# कृति

चिंतन-मनन

एकांत

शवयात्रा

आचरण सागर, २४ नवम्बर २०१

## राजनीति का बदलता स्वरूप

आचरण

विचार-मंथन

## जीर्ण, शीर्ण होते हमारे धार्मिक स्थल

विचार मंथन

## कहां गए वे दिन कहां गए वे लोग (2)

विचार-मंथन

## अंधा युग-क्या समाधान

विचार-मंथन

## लुप्त होती लोक कलाएं एवं पारम्परिक खेल

### श्रीमती शोभा मिश्र

विचार-मंथन

## कहां गए वे दिन और कहां गए वे लोग

Scanned with OKEN Scanner

कृति
– श्रीमती शोभा मिश्र

प्रथम संस्करण – 2014

प्रकाशक
**अमन प्रकाशन,**
नमक मंडी, सागर 470002 (म.प्र.)
*Ph. : 07582-406929*

अक्षर संयोजन
**एक्टिव कम्प्यूटर्स, सागर**
मोबा. – 9826434225

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | राजनीति का बदलता स्वरूप | 7 |
| 2. | डॉ. गौर बुन्देली माटी की जीवंतता | 8-10 |
| 3. | शवयात्रा | 11 |
| 4. | समस्या अभी वाकी है | 12 |
| 5. | जीर्ण, शीर्ण होती हमारे धार्मिक स्थल | 13 |
| 6 | मानवता के शिखर पुरुष डॉ. अंबेडकर | 14-16 |
| 7 | आरक्षण कर रहा हमारे देश को खोखला | 17-18 |
| 8 | एकांत | 19 |
| 9 | लुप्त होती लोक कलाएं एवं पारंपरिक खेल 20 | |
| 10 | अंधा युग- क्या समाधान | 21 |
| 11 | मानवता के दीप पुंज, ईश दूत-"ईसा" | 22-24 |
| 12 | कहां गए दिन और कहां गए वे लोग | 25 |
| 13 | कहां गए वे दिन कहां गए वे लोग (2) | 26 |
| 14 | कर्म और चेतना के संवाहक-स्वामी विवेकानंद | 27-28 |
| 15 | युग चेताः महात्मा गांधी | 29-32 |
| 16 | यदि निराला न होते | 33-35 |
| 17 | संत बेलेनटाइन का संतत्व | 36-38 |
| 18 | शिव आध्यामित्कता की अद्‌भुत प्रतीति | 39-41 |
| 19 | एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल | 42-43 |
| 20 | धर्म, दर्शन के प्रतीक परमहंस रामकृष्ण देव | 44-47 |
| 21 | हमारी गरिमा, हमारी आजादी | 48-50 |
| 22 | रंग रस का त्यौहार होली | 51-53 |
| 23 | कलम आज उनकी जय बोल | 54-57 |
| 24 | सत्ता और सम्पत्ति | |
| | राजनीतिक अलगाव | 58 |




Scanned with OKEN Scanner

25 मोदी का अहंकार
आखिर दोषी कौन 59
26 प्रकृति का प्रकोप
चुनौती का परिवर्तन 60
27 ये हैं वेलेंटाइन डे
उपेक्षित आदिवासी 61
28 संस्थाओं की चकाचौंध
गुम होते ग्रीटिंग कार्ड 62
29 योग्यता की कमी
विषम परिस्थितियां 63
30 भारत की छवि
बेटी का बलिदान 64
31 त्रासदी से सबक लें
आप का आम आदमी 65
31 कब होगा अंत
मोदी बनाम राहुल 66
32 ये कैसा न्याय
राजनीति व नैतिक मूल्य 67
33 अनमोल रतन
आप को खतरा 68
34 योजनाएं और हम
राजनीतिक हथकंडे 69
35 मेरी आवाज सुनो
गरीबी की परिभाषा 70




Scanned with OKEN Scanner

# योग्यता की कमी

पाठकों की दुनिया

# बेटी का बलिदान

पिछले साल की 16 दिसंबर की वह काली रात कोई भूल नहीं सकता, जब देश की बेटी चीख-चीखकर मदद मांग रही थी और देश सो रहा था। ऐसी तारीखों को कभी भूलना नहीं चाहिए, क्योंकि ये ही वो हादसे हैं जो हमें ताकीद करते हैं कि ऐसे उपाय करो कि इसकी पुनरावृत्ति न हो सके। निर्भया ने तो अपने दर्द से मुक्ति पा ली, लेकिन उसका परिवार क्या करे, जो रोज तिल-तिल मर रहा है। वास्तव में उसे आज भी न्याय नहीं मिला है। जब तक उसके गुनहगारों को फांसी की सजा नहीं हो जाती न्याय की आस अधूरी रहेगी। जो मुख्य आरोपी है, उसे किशोर होने का लाभ देना भी उचित नहीं है, क्योंकि उसने दरिंदगी में अपराधियों को भी पीछे छोड़ दिया है। उस मासूम बेटी का बलिदान यूं ही व्यर्थ नहीं जाना चाहिए।

**-श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

पाठकों की दुनिया

# मेरी आवाज सुनो

बड़ी भावपूर्ण पंक्तियां हैं उपर्युक्त शीर्षक के पूरे गीत की। इन पंक्तियों में कवि ने बड़े ही भावुकता के साथ पंडित जवाहर लाल नेहरूजी की वाणी का वर्णन किया है। 14 नवंबर को देश के युगचेता नेहरूजी की जयंती है। उत्सवी तामझाम और समारोहों की औपचारिकता में संपन्न होती हैं जयंतियां। ये अवसर अब समारोहों के शिकंजे में जकड़े हुए हैं और अपनी अनुभूति व अस्मिता खोते जा रहे हैं। हर वर्ष हम नेहरू की जयंती बाल दिवस के रूप में मनाते हैं, लेकिन उनके सपने, उनके त्याग, उनकी तपस्या क्या थी इससे किसी को सरकार नहीं है। बस मंच, मंच पर विराजमान अतिथि, मुख्य अतिथि और अध्यक्ष की आवाभगत, स्वागत और फोटो के बीच सही उद्देश्य दबकर रह जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विचारों के बिखराव को रोककर हम इसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं। इस बाल दिवस पर हम उन नेहरूजी को समझें जिन्होंने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' की रचना कर राष्ट्र के प्रति चैतन्य जागृत किया था। कितनी अकुलाहट होगी उनके अंदर भारत के अतीत की खोज की और उसे वर्तमान पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने की। 'मेरी आवाज सुनो' ये स्पंदन ध्वनि, इसका स्मरण कितना प्रासंगिक है।

**-श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

पाठकों की दुनिया

# विषम...

# ...जनीतिक

आरक्षण और अल... वर्तमान में राजनी... बनकर रह गए हैं। वोट... इनका कहीं ठोस उपयोग दिखाई देता। एक समय ... कमजोर और पिछड़े व... लिए वरदान साबित हो र... अब हालत ये है कि ये ... भी इसे राजनीति के लि... जा रहा है। अब एकमुश्त ... करने के लिए किसी न कि... आरक्षित वर्ग में शामिल ... है, उनके अलावा जो उस... लाभार्थी हैं। इसी तरह से समुदाय को भी विकास ... से जोड़ने के बजाय उन्हें सुविधाओं के झांसे में र... है। वास्तव में यदि राजनीति विकास माध्यम बनाया जाए और अल्पसंख्यक जैसी ... ही खत्म होने लगेगी।

**-श्रीमती शोभा...**

# आप का ...

आप के संस्था... सीएम अरविंद के... जनता की लड़ाई ल... संघर्ष से लगता है। ... आजादी के बाद से सत्ता सुख भोग रही पार्टियों में खलबली है। खतरे को भांपते हुए पार्टियां आए दिन आरोप-प्रत्यारोप करते हुए उन्हें आरोपों से घेरने की कोशिश करती हैं। ऐसा हो भी रहा है तो स्वाभाविक ही है, क्योंकि एक तरफ राजनीति के मंझे खिलाड़ी और पर्दे के पीछे उनकी नौकरशाही से सांठगांठ और दूसरी ओर कहां राजनीति में कदम रखने वाला नया नेता और उसकी नई नवेली पार्टी। इन परिस्थितियों में भी अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी आप पूरे आत्मविश्वास के साथ मैदान में डटी हुई है और आने वाले लोकसभा चुनाव में राजनीतिक दलों को सबक सिखाएगी। देश में कृत्रिम अभाव और अधिक लागत बताकर जनता को लूटने वालों का सबक सिखाने के लिए लगता है आप ने कमर कस ली है।

**-श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

...ग्रेस पार्टी देश की ... पार्टी है, जिसने देश ... म इसके बलि... हैं। लेकिन ... है, उसे देर ... 'आज व... मंत्री ब...

...अपने तरीके ... ओं ने इस ... कुछ युवा ... मानसिकता ... बहाने जो कु... सभ्य सम... जा सकता ... न की प्रेम ... के बीच ए... रह गई है। ... में हृदय के ... त किया है, ... को क्लेशरहि... है, जो आपस ... भाव को ... ति कर सब... के मायने का... भी हो गए हैं

...मा मिश्र, सागर

...मा का ढूंढना होगा।

# योग...

शासन बर... देश निरंतर ... रहा है। ... योजनाएं बन... ये है कि शास... होने के पहले ... जाती हैं। ... इसके अंत... ...

...पर कर ... कितना अन्याय, ... हुआ। एक भ्रष्ट शिक्षक ... कर ये बड़े होंगे। ये हमें ही तय करना होगा कि भ्रष्टाचार को हम अपने स्तर से ही खत्म करें।

**- शोभा मिश्र**, सागर

...जरिये सहानुभूति ... देश की जनता का भरोसा जीतना है तो पारिवारिक मुद्दे नहीं बल्कि देश में व्याप्त समस्याओं को उठाना होगा तभी जनता आपको सिर-आंखों पर बिठाएगी।

**- शोभा मिश्र**, सागर

**शोभा मिश्र**, सागर

...है कि अब कोई ... है। यदि हम सब ... समाज में प्रचलन में ... हमें ये नहीं भूलना ... ओं में ही देश की ...

**...शोभा मिश्र**, सागर

...यह सवाल उठता है ... प्रकोप की इतनी ... होती थी। ... होता था। ... आज अपना विश्वास किया और जिनके हाथों ... सिर्फ उसे सौंपी है। वे ही देश और देश की जनता ... शिकार को लूट रहे हैं। ऐसे में देश की ... और सरकार पर कैसे भरोसा कर सकती है ... जब कर्णधार खुद ही बेईमानी में लिप्त हैं फिर तो वह संस्थाओं में हो रहे घोटालों पर कैसे कार्यवाही कर सकती है। यह सोचने को विवश करता है। इसके लिए सरकार ... भी कड़े कानून बनाना चाहिए ताकि ... पर अंकुश लग सके। इन सब चीजों ... अंत होगा पता नहीं।

**- शोभा मिश्र**, सागर

**...श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

Scanned with OKEN Scanner